श्री दुर्गा चालीसा

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी |
नमो नमो अंबे दुःख हरनी || 1 ||

निरंकार है ज्योति तुम्हारी |
तिहूँ लोक फैली उजियारी || 2 ||

शशि ललाट मुख महाविशाला |
नेत्र लाल भृकुटि विकराला || 3 ||

रूप मातु को अधिक सुहावे |
दरश करत जन अति सुख पावे || 4 ||

तुम संसार शक्ति लय कीना |
पालन हेतु अन्न धन दीना || 5 ||

अन्नपूर्णा हुयि जग पाला |
तुम ही आदि सुंदरी बाला || 6 ||

प्रलयकाल सब नाशन हारी |
तुम गौरी शिव शंकर प्यारी || 7 ||

शिव योगी तुम्हरे गुण गावें |
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें || 8 ||

रूप सरस्वती का तुम धारा |
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा || 9 ||

धरा रूप नरसिंह को अंबा |
परगट भयि फाड के खंबा || 10 ||

रक्षा कर प्रह्लाद बचायो |
हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो || 11 ||

लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं |
श्री नारायण अंग समाहीं || 12 ||

क्षीरसिंधु में करत विलासा |
दयासिंधु दीजै मन आसा || 13 ||

हिंगलाज में तुम्हीं भवानी |
महिमा अमित न जात बखानी || 14 ||

मातंगी धूमावति माता |
भुवनेश्वरी बगला सुखदाता || 15 ||

श्री भैरव तारा जग तारिणी |
छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी || 16 ||

केहरि वाहन सोह भवानी |
लांगुर वीर चलत अगवानी || 17 ||

कर में खप्पर खडग विराजे |
जाको देख काल डर भाजे || 18 ||

तोहे कर में अस्त्र त्रिशूला |
जाते उठत शत्रु हिय शूला || 19 ||

नगरकोटि में तुम्हीं विराजत |
तिहुँ लोक में डंका बाजत || 20 ||

शुंभ निशुंभ दानव तुम मारे |
रक्तबीज शंखन संहारे || 21 ||

महिषासुर नृप अति अभिमानी |
जेहि अघ भार मही अकुलानी || 22 ||

रूप कराल कालिका धारा |
सेन सहित तुम तिहि संहारा || 23 ||

पडी भीढ संतन पर जब जब |
भयि सहाय मातु तुम तब तब || 24 ||

अमरपुरी अरु बासव लोका |
तब महिमा सब कहें अशोका || 25 ||

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी |
तुम्हें सदा पूजें नर नारी || 26 ||

प्रेम भक्ति से जो यश गावें |
दुःख दारिद्र निकट नहिं आवें || 27 ||

ध्यावे तुम्हें जो नर मन लायि |
जन्म मरण ते सौं छुट जायि || 28 ||

जोगी सुर मुनि कहत पुकारी |
योग न होयि बिन शक्ति तुम्हारी || 29 ||

शंकर आचारज तप कीनो |
काम अरु क्रोध जीत सब लीनो || 30 ||

निशिदिन ध्यान धरो शंकर को |
काहु काल नहिं सुमिरो तुमको || 31 ||

शक्ति रूप को मरम न पायो |
शक्ति गयी तब मन पछतायो || 32 ||

शरणागत हुयि कीर्ति बखानी |
जय जय जय जगदंब भवानी || 33 ||

भयि प्रसन्न आदि जगदंबा |
दयि शक्ति नहिं कीन विलंबा || 34 ||

मोको मातु कष्ट अति घेरो |
तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो || 35 ||

आशा तृष्णा निपट सतावें |
रिपु मूरख मोहि अति दर पावैं || 36 ||

शत्रु नाश कीजै महारानी |
सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी || 37 ||

करो कृपा हे मातु दयाला |
ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला | 38 ||

जब लगि जियूँ दया फल पावूँ |
तुम्हरो यश मैं सदा सुनावूँ || 39 ||

दुर्गा चालीसा जो गावै |
सब सुख भोग परमपद पावै || 40 ||

देवीदास शरण निज जानी |
करहु कृपा जगदंब भवानी ||